ISSN: 2393-
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in July 2025

बीकानेर नगर के श्री पंचदेव मंदिर का महत्त्व

शशि गोदारा, शोधार्थी (इतिहास विभाग), राजकीय डूंगर कॉलेज, बीकानेर
डॉ उषा लामरोर, सहायक आचार्य (इतिहास विभाग), राजकीय डूंगर कॉलेज, बीकानेर

सारांश

यह शोध-पत्र बीकानेर नगर के किले के परकोटे के समीप स्थित श्री पंचदेव मंदिर, जिसे धनीनाथगिरि मठ के नाम से भी जाना जाता है, के ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य महत्त्व का अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में मंदिर एवं मठ की स्थापना से जुड़ी परम्पराओं, स्वामी धनीनाथ गिरि तथा उनके उत्तराधिकारियों की भूमिका, शिलालेखीय प्रमाण, मंदिर निर्माण की पृष्ठभूमि तथा द्विशताब्दी समारोह का विवेचन किया गया है। साथ ही मंदिर की राजस्थानी नागर स्थापत्य शैली, गर्भगृहों में स्थापित पंचदेव प्रतिमाओं तथा मठ की धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों को रेखांकित किया गया है। अध्ययन के आधार पर श्री पंचदेव मंदिर को बीकानेर की धार्मिक आस्था, स्थानीय स्थापत्य परम्परा, सेवा-भाव और सांस्कृतिक विरासत के महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में देखा गया है।

मुख्य शब्द: श्री पंचदेव मंदिर, धनीनाथगिरि मठ, बीकानेर, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत, राजस्थानी नागर शैली, पंचदेव प्रतिमाएँ, स्थापत्य कला

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राचीन काल से संन्यास की परम्परा चार ऋषियों जिनमें भगवान शंकर और सनत कुमार थे। शुरूआत हुई। 'नारायण' पदभव वशिष्ठम्- इस उक्ति का वर्णन व्यास जी के विस्तारित वर्णन से इस परम्परा की पुष्टि हुई। पीढों और सात अखाड़ों की व्यवस्था जगद्गुरू शंकराचार्य जी ने अपने समय काल में महानुशासन की व्यवस्था की थी। कुम्भ मेलों के समय चारों शंकराचार्यो। सातों अखाड़ों के साथ शाही स्नान के लिए जाते थे। साथ ही अखाड़ों के साधकों को संन्यास देते थे। आज भी तीर्थराज प्रयाग से प्रथम स्नान गोविन्द मठ के आचार्य के द्वारा होता है।

वर्तमान में भी यही परम्परा प्रचलित है। गोविन्द मठ के निर्माण से पूर्व गादी से स्थान नीची बागस्थ बीकानेर भवन में स्थित था। जो बीकानेर नरेश के द्वारा भेंट में दिया गया था। तब से गादी इसी स्थान पर है। आज समाज में गोविन्द मठ ही जाना जाता है। आचार्यों को भी गोविन्द मठ आचार्य ही कहा जाता है। ये आचार्य बीकानेर नरेश के आमंत्रण पर सत्संग और चतुर्मास सत्संग करने पधारते थे और सत्संग करने के बाद पुनः काशी पधार जाते थे। इसी क्रम में लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व गोविन्द मठ के आचार्य श्री धनीगिरि जी को बीकानेर आने का अवसर प्राप्त हुआ उन्हें यहां का शांत वातावरण अच्छा लगा इसलिए उन्होंने काशी जाकर अपनी गद्दी अपने शिष्य शास्त्रों के भाष्यकार चिद्घनानंद श्री को सौंप दी और स्वयं बीकानेर के संसोलाव सरोवर के किनारे विराजे। तत्पश्चात् यहां के श्रद्धालु भक्तों के निवेदन पर बीकानेर के मुख्य द्वार कोटगेट के पास

धनीनाथ गिरि मठ एवं पंचदेव मंदिर

किले की दीवार के पास खेजड़ी के वृक्ष के नीचे पर्णकुटी बनवाकर निवास करने लगे। इनके त्यागमयी जीवन और तपोनिष्ठ आचरण से प्रभावित बीकानेर के राजपरिवार ने स्वामीजी को विधिवत् बीकानेर के राजगुरू की उपाधि से विभूषित किया। कालान्तर में भू-भाग दान में देकर धनीनाथ गिरि जी के नाम से प्रसिद्ध मठ का निर्माण किया गया। वर्तमान में इसी मठ को धनीनाथ जी का मठ भी कहते है। इसी मंदिर का अन्य नाम श्री पंचदेव मंदिर भी है।

प्रथम आचार्य श्री स्वामी धनीनाथ गिरि बने। श्री धनीनाथ गिरी जी की गद्दी त्यागने के बाद बख्तगिरि जी को राजगुरू के पद पर प्रतिष्ठित किया गया था। परन्तु गुरूवियोग के कारण उन्होंने जीवित समाधि ले ली। इनकी समाधि परिसर में सीढियों के पास दायीं और स्थित है। इनके पश्चात् योग्य शिष्य गोविन्द जी को मठ की गद्दी पर बैठाया गया। राजगुरू की गद्दी पर बैठने वाला शिष्य काशी से बीकानेर भेजा जाता था। यह परम्परा वर्तमान आचार्य स्वामी विशोकानन्द भारती तक चली आ रही है। समय परिवर्तन के कारण एक नये अध्याय की शुरूआत हुई और यह कि स्वामी विशोकानन्द जी गोविन्द मठ के शिष्य होने

के कारण पूर्वाचार्य पूज्यवाद श्री स्वामी सोमेश्वरानन्द जी के ब्रह्मलीन होने पर बीकानेर राजगुरू गादी पर विराजे परन्तु निर्वाण पीठाधीश्वर आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी विश्वदेवानन्द जी के ब्रह्मलीन होने पर स्वामी विशोकानन्द भारती जी को गोविन्द मठ के निर्वाणपीठाधीश्वर के पद पर प्रतिष्ठित हुए। इस घटना के अनुसार गोविन्द मठ आचार्य का अतिरिक्त भार भी संभाल रहे है।

मंदिर निर्माण की पृष्ठभूमि

परोपकाराय सतां विभूतयः॥

यह कथन मठ निर्माण के सन्दर्भ में एक प्रसंग किसी श्रेष्ठी कुल की महिला से जुड़ा हुआ है। स्वामी जी के आशीर्वाद के फलस्वरूप श्रेष्ठी कुल की एक महिला की जब मनोकामना पूर्ण हुई तो वह भेंट हेतु एक बड़ी राशि लेकर स्वामी जी के समक्ष उपस्थित हुई परन्तु स्वामी जी ने राशि लेने से मना कर दिया। तब श्रद्धामयी महिला ने बीकानेर पधारे हुए महात्मा बख्तगिरि से सहायता करने के लिए निवेदन किया बख्तगिरि जी और फतेह भारती जी ने विचार परामर्श करने के पश्चात् उस भेंट स्वरूप दी गई राशि को रख लिया तब स्वामी धनीनाथ जी गिरि महाराज ने क्षुब्ध होकर कहा - क्या करोगे इस रूपये का ?

शिलालेखीय प्रमाण

दोनों महात्माओं ने धनीनाथ जी से कहा कि इस रकम से पंचदेवो का एक मंदिर बनवा दिया जाए जिससे साधारण जनता को लाभ मिलेगा और आने वाले महात्माओं का सत्कार एवं सेवा सम्मान होगा। पूज्य स्वामी जी ने मंदिर निर्माण की स्वीकृति प्रदान कर दी तो अक्षय द्वितीया संवत् 1742 वि. को इस मठ की नींव पड़ी। तत्कालीन महाराजा बीकानेर श्री सूरतसिंह जी ने मठ निर्माण के लिए परकोटे के साथ जुड़ा हुआ विशाल भूखण्ड ताम्रपत्र के द्वारा प्रदान किया। मंदिर निर्माण का कार्य श्रद्धाभाव से तीव्रगति से करवाया गया तथा उसी वर्ष फाल्गुन शुक्ल दशमी को इस मठ की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

स्वामी विशोकानन्द जी के सान्निध्य में द्विशताब्दी समारोह

श्री पंचमंदिर के शिलालेख में वर्णित है कि वि.स. 1749 शक संवत् 1928 में श्रीमुख नामक वर्ण में वसन्त ऋतु मे वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की अक्षय द्वितीय सोमवार को घ. 49 प. 28 कृतिका नक्षत्रों में घ. 22 प. 42 शुभकरण शुभतिथि शुभ योग में पांचो मंदिरों का शिलान्यास (जिन्हे पादन्यास भी कहा जाता है) संस्कार करवाकर उसी वर्ष यथाविधि मंदिरों का निर्माण कराकर फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को घ.

9/0 पुनर्वसु नक्षत्र में घ. 60/0 सौभाग्य योग में घ. 46/0 शुभकरण शुभलग्न में यथोक्त विधि से प्रतिष्ठा करवाकर श्री परमेश्वर के लिए अर्पित किया ऐसा जानना चाहिए। सदा-शिव की जय हो।

स्वामी विशोकानन्द जी महाराज 12 वें आचार्य बने। इनके सानिध्य में अक्षय तृतीया संवत् 2058 से पंचमंदिर के द्विशताब्दी समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इसका उल्लेख मंदिर के मुख्य द्वार पर किया गया है। आयोजन के मुख्य अतिथि महाराजा नरेन्द्रसिंह जी बीकानेर ने अपने स्वागत भाव के साथ बीकानेर के राजमाता सुशीला कुमारी जी का सन्देश भी सुनाया।

धनीनाथ गिरि मठ की धार्मिक एवं सांस्कृतिक भूमिका

द्विशताब्दी समारोह उद्घाटन के अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए पूज्यवाद शंकराचार्य श्री स्वामी निश्चलानंद जी महाराज ने कहा कि मुझे द्विशताब्दी समारोह का उद्घाटन करते हुए अति हर्ष हो रहा है। इस अवसर पर उन्होंने अपने सम्बोधन मे कहा कि अंग्रेजो ने देश का नौ बार विभाजन किया। आजादी के बाद प्रधानमंत्रियों ने तीन बार तो विभाजन कर दिया है।

इसी अवसर पर मुकाम पीठाधीश्वर स्वामी रामानन्द जी ने गौरक्षा के के लिए जनता को आगे आने की अपील की उन्होंने कहा कि एक गाय बचती है तो तैंतीस करोड़ देवी देवता प्रसन्न होते है। क्योंकि उनका गाय में निवास है।

श्री धनीनाथगिरि मठ ब्रह्मविद्या सनातन धर्म व भारतीय संस्कृति का प्रमुख केन्द्र है। इसी दौरान श्री सोमदत श्री माली। जानकीनारायण श्रीमाली तथा श्रीलाल नथमल जोशी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए मठ की

प्रगति के बारे में बताया। पंचमंदिर में एक उपयोगी वाचनालय की स्थापना तथा वर्तमान में संचालित वैदिक संस्कार विद्यालय के विस्तार की घोषणा की।

पंचमंदिर में स्वामी विशोकानन्द जी का चयन व मनोयन बीकानेर के लिए वरदान सिद्ध हुआ अब तक के इतिहास में एक ऐसे महात्मा है। जो आचार्य महामण्डलेश्वर के रूप में किसी मंदिर की गद्दी होने के कारण अब पंचमंदिर में समय-समय पर महामण्डलेश्वर व विभिन्न पीठों के शंकराचार्यो का आगमन होता ही रहता है। अन्यथा आचार्यों द्वारा प्राप्त हो रहा पथ प्रदर्शन पुजारियों द्वारा बजने वाली घंटी तक सीमित हो जाता।

श्री पंचदेव मंदिर का स्थापत्य स्वरूप

श्री पंचदेव मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से एक अनोखा उदाहरण है। इसका निर्माण राजस्थानी नागर शैली मे किया गया है। बीकानेर के मंदिरों मे इस शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ऊंचे शिखर। मण्डप। गर्भगृह और नक्काशीदार स्तम्भ इसकी पहचान है। यहां धार्मिक भावना और कलात्मक सौन्दर्य का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

इस मंदिर का मुख्य गर्भगृह पत्थर का है। जिसके चारों ओर प्रदक्षिणा पथ बना है। गर्भगृह के ऊपर ऊँचा शिखर और कलश स्थित है। मण्डप भाग में बहुकोणीय स्तम्भ है। जिन पर सूक्ष्म नक्काशी की गई है। गर्भगृह में पांच देवताओं की मूर्तियां स्थापित है। इन गर्भगृह का दरवाजा चांदी का बना हुआ है।

पंचदेव प्रतिमाएँ एवं गर्भगृह

प्रथम गर्भगृह में सिद्धि विनायक गणेश जी की मूर्ति है। गणेश जी के तीसरा नेत्र बना हुआ है। यह मूर्ति रिद्धि सिद्धि के साथ व मूषक की मूर्ति स्थापित है।

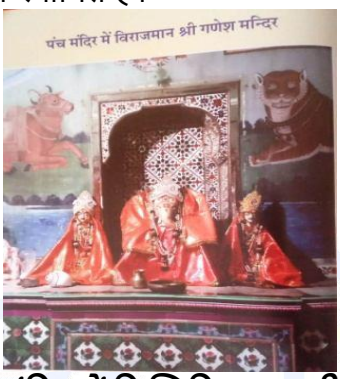

चित्र 2. पंच मंदिर में सिद्धिविनायक श्री गणेश मंदिर

दूसरा गर्भगृह में शिवलिंग पंचमुखी है। जिन्हे पशुपति नाथ भी कहते है। यह स्वामी धनीनाथ जी ने बनवाया था पंचतत्वों के हिसाब से बना है।

तीसरा गर्भगृह में लक्ष्मीनारायण जी की मूर्ति है। इनकी मूर्ति के नीचले हिस्से में गरूड़ भगवान की मूर्ति है।

चैथा गर्भगृह श्री भुनेश्वरी माता जी की है। इसमें बीकानेर के राजाओं की भी तस्वीरे चित्रित की गई है।

पांचवें गर्भगृह में सूर्य नारायण भगवान जी की मूर्ति स्थापित है। इन्ही के साथ राम सीता के चरणो में हनुमान जी मूर्ति भी स्थापित है।

गर्भगृह के ऊपर ऊँचा शिखर निर्मित है। जिनमें कलश और आमलक प्रमुख है। मुख्य द्वार पर सुन्दर नक्काशी की गई है। जिसमे पुष्प और ज्यामितीय आकृतियों का अद्भुत समन्वय है। मंदिर परिसर में एक छोटा कुण्ड भी है। जहां बतखे रहती है। मंदिर के आंगन में पूज्यपाद श्री सोमेश्वरानन्द भारती महाराज की मूर्ति। पूज्यपाद आद्य शंकराचार्य श्री भगवान की मूर्ति और वरदाता बालाजी साफा वाले हनुमान जी की मूर्ति स्थापित है।

मंदिर परिसर की अन्य विशेषताएँ

गर्भगृह के आगे नन्दी व शेर की मूर्ति है। दीवारों में 'ऊँ' लिखा हुआ है। इसी परिसर में गौशाला भी बनी हुई है। 2) फुट चैड़ी सफील की दीवार बनी हुई है।

उपसंहार

बीकानेर के किले के परकोटे के पास स्थित पंच मंदिर का निर्माण एक अत्यन्त धार्मिक सांस्कृतिक और ज्योतिषीय आधार पर किया गया। इसमें समय की गणना तिथि। योग। ग्रहो की स्थिति का विशेष ध्यान रखा गया जो राजपूत कालीन स्थापत्य परम्परा की विशिष्टता दर्शाता है। मंदिर का निर्माण किसी व्यक्तिगत यश के लिए बल्कि सम्पूर्ण समाज और सनातन परम्परा की आस्था के प्रतीक के रूप में किया गया था। यह मठ केवल एक धार्मिक केन्द्र नहीं बल्कि बीकानेर की सामाजिक और सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक है। यह आस्था सेवा और लोकमंगल की भावना का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह पंचदेव मंदिर बीकानेर नगर के स्थापत्य धरोवर का प्रमुख प्रतीक है। इसकी रचना में स्थानीय पत्थर। शिल्प और परम्परा का अद्भूत सामंजस्य है। यह मंदिर भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक एकता का संदेश देता है। जहां अनेकता में एकता और विविधता में समानता का दर्शन होता है। ।

संदर्भ सूची

प्राथमिक स्रोत

1. महामण्डलेश्वर राजगुरु स्वामी श्री विशोकानन्द जी भारती से प्रत्यक्ष साक्षात्कार।
2. पण्डित भवानी शंकर जी से प्रत्यक्ष साक्षात्कार।
3. मंदिर कमेटी के सदस्यों से साक्षात्कार — (क) श्री भवानी सिंह राठौड़, (ख) मोहनलाल सोनी, (ग) सोमदत्त श्रीमाली।
4. शोधार्थी द्वारा स्थल अवलोकन।

द्वितीयक स्रोत

1. श्रीमाली, पं. जानकी नारायण — रजत जयंती समारोह वर्ष वि.स. 2073–2074 में प्रकाशित "श्री धनीनाथ गिरिमठ — पंच मंदिर बीकानेर का गौरवशाली इतिहास एवं उपलब्धियाँ"।
2. सोमानी, आर. वी. — Temples of Rajasthan. Publication Scheme, 1997।
3. शर्मा, गोपीनाथ — राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2009।
4. गुप्ता, मोहनलाल — बीकानेर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक व ऐतिहासिक अध्ययन, 2016।
5. जैन, त्रिलोक कुमार — बीकानेर की विरासत और सांस्कृतिक धरोहर।